Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

चंबा शहर के मंदिरों की स्थापत्य कला शैली

DR. NAND LAL

Assistant Professor, Department of Visual Arts, Himachal Pradesh University, Summerhill, Shimla

सारांश

उत्तरी भारत में इरावती (रावी) नदी के किनारे एक हजार वर्ष पूर्व से बसा चंबा एक ऐसा शहर है जो अपनी समृद्धि तथा सुदृढ़ लोक संस्कृति, स्थापत्य और लोक कला धरोहरों के रूप में संजोए हुए हैं। यहां के विभिन्न मंदिरों में कला संस्कृति की अद्भुत झलक प्रस्तुत होती है। जब भी कोई दर्शक या पर्यटक इन मंदिरों को देखता है तो मंदिरों की बनावट, सजावट, दीवारों के अलंकरण आदि को देखकर मंत्रमुग्ध होकर उन दिनों की कल्पना करने लगता है जब यह मंदिर बनाए गए होंगे। साथ ही वह आध्यात्मिक सौंदर्यपरक एवं कलाप्रिय उस शासक के बारे में भी सोचता है जिसने अपने कल्पना लोक में इन भव्य स्थापत्य कला के नमूनों को मूर्त रूप दिया। चंबा शहर के प्राचीन मंदिर जो 10 वीं से 18 वीं शताब्दी के मध्य में बने है विश्व की धरोहरों के रूप में बहुत प्रसिद्ध है। मेरु वर्मन के वंशजों में साहिल वर्मन (920 ईस्वी से 940 ईस्वी) ऐसा राजा हुआ जिसने चंबा को **मंदिरों की नगरी** बनाया। इसे शहर के कोने-कोने में अनेकों छोटे-बड़े नागर शैली के मंदिर बने हैं। शहर से थोड़ी दूरी पर स्थित चामुंडा मंदिर ही एकमात्र पहाड़ी शैली का मंदिर है। साहिल वर्मन ने शहर की स्थापना के समय से ही धर्म व आस्था के प्रतीक इन भव्य मंदिरों को कलात्मक दृष्टि से समृद्ध बनवाया। ये मंदिर वास्तुशिल्प/ स्थापत्य का बेजोड़ नमूना तो है ही इसके साथ-साथ इस में स्थापित प्रतिमाओं को जिस शिल्प में गढ़ा गया है, वह भी मुग्ध कर देने वाला है। चंबा रियासत का यह सौभाग्य रहा है कि यहां कई ऐसे शासक हुए जो कलाप्रेमी तो थे ही बल्कि उन्होंने कला और संस्कृति को फलने फूलने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मुख्य शब्द: स्थापत्य कला , धरोहरों , मंदिर, कलात्मक, नागर शैली, पहाड़ी शैली।

भूमिका

हिमाचल प्रदेश अपनी प्राचीन संस्कृति, कला और रीति-रिवाजों के लिए विश्व भर में जाना जाता है। इस भू-भाग को देवताओं तथा ऋषि मुनियों ने अपना निवास स्थान बनाकर देवतुल्य बनाया है। हिमाचल प्रदेश का प्राचीन इतिहास, स्थापत्य कला शैली (वास्तुकला), यहां प्रचलित लोकगीत, लोकगाथाएं, लोक नृत्य, कला और लोक परंपराएं इस प्रदेश की संस्कृति है। यहां का ग्राम्य जीवन, जातियों का पारस्परिक आदान-प्रदान तथा भौगोलिक भिन्नताएं सुरम्य प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर है।[1] मंदिरों की इस पावन धरती पर, एक सर्वेक्षण के अनुसार, 5000 से भी अधिक मंदिर हैं। इनमें सर्वाधिक मंदिर शिव और शक्ति के हैं। इसके साथ-साथ भगवान विष्णु के विभिन्न रूपों और स्थानीय देवताओं को भी इस पहाड़ी राज्य में आराध्य देव के रूप में पूजा जाता है।

हिमाचल प्रदेश के अधिकांश मंदिर अपनी स्थापत्य कला शैली के लिए हजारों वर्षों से बहुत प्रसिद्ध हैं। यहां के मंदिरों को मुख्यतः तीन स्थापत्य शैलियों में बांटा जा सकता है। इन मंदिरों को देवताओं, भौगोलिक परिस्थितियों तथा निर्माण सामग्री के आधार पर भी वर्गीकृत किया गया है। भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न वास्तु शैली के मंदिर समस्त हिमाचल प्रदेश में देखने को मिलते हैं। जिनमें मुख्यतः निम्नलिखित तीन प्रकार के मंदिर आते हैं:

1 नागर मंदिर शैली (शिखर शैली)

2 पैंट रूफ मंदिर शैली (पहाड़ी शैली)

3 पैगोड़ा मंदिर शैली

(1) **नागर या शिखर शैली**

नागर स्थापत्य शैली के विकास का श्रेय गुप्त नरेशों को दिया जाता है परंतु गुर्जर प्रतिहारा काल (पूर्व मध्यकाल) में इस शैली का संपूर्ण विकास संभव हो सका।[2] 9वीं, 10वीं शताब्दी से लेकर चंबा शहर में नागर मंदिरों का अधिकतर निर्माण हुआ। शिखराकार शैली में निर्मित यह मंदिर हिमाचल प्रदेश ही नहीं बल्कि भारतवर्ष की सांस्कृतिक धरोहर बन चुके हैं। नागर शैली के मंदिर वर्गाकार एवं आयताकार दोनों रूपों में पाए गए हैं।[3]

हिमाचल प्रदेश में निर्मित इन शिखर शैली के मंदिरों को प्रायः दो भागों में विभाजित किया गया है - (1) अखंड पाषाण मंदिर (2) इमारती पत्थर से बना मंदिर।[4] अखंड पाषाण मंदिर हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिले के मसरूर में निर्मित एकमात्र उदाहरण है। इस स्थान पर पहाड़ी (चट्टान) को काटकर इस मंदिर समूह का निर्माण किया गया है। यह बलुआ पत्थर कहलाता है। जबकि दूसरे प्रकार के मंदिर (इमारती पत्थर से बना मंदिर) संपूर्ण हिमाचल में पाए गए हैं।

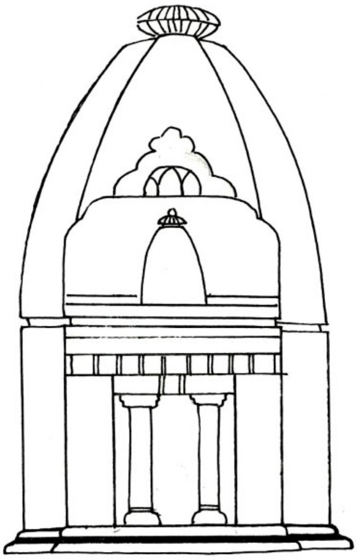

(1)

नागर मंदिर शैली

नागर/शिखर शैली के चंबा में निर्मित इन सभी मंदिरों के शिखर पर अमलक दृष्टिगोचर होता है। यह अम्लक एक सुंदर बजौरा जैसा होता है जिसमें गोलाई में खाईयां खुदी होती हैं। चंबा के लगभग सभी मंदिरों के इन अमलकों को पत्थर (स्लेटों) की छत से ढका गया है तथा छतों के ऊपर चक्राकार या गोल कलश सजा रहता है। मंदिरों पर बनाए गए ये छत्र राजा छतर सिंह द्वारा (1664-1690 ईस्वी) बनाए गए, जिस समय औरंगजेब ने सभी मंदिरों को गिराने का आदेश दिया था। यहां के लगभग सभी शिखर शैली के मंदिरों की बाहरी बनावट एक जैसी है।[5] मंदिर के द्वार पर गणेश जी की मूर्ति के ऊपर या तो नवग्रह चित्रित किए गए हैं या देवी के नौ रूपों का भी अंकन सामने आता है। मंदिर के प्रत्येक पत्थर को सुंदर रूप में गढ़ा गया है। मंदिर के मुख्य द्वार को छोड़कर बाकी तीनों दीवारों (बाएं, दाएं तथा ठीक पीछे) पर छोटे-छोटे आले (कोठरियां) बनाए गए हैं। इन आलों में किसी ना किसी देवता की मूर्ति रखी गई होती है। इन आलों में गर्भगृह में

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

स्थापित मुख्य मूर्ति से संबंधित मूर्तियां ही रखी गई है। हालांकि वर्तमान में कुछ आले या तो खाली है या उनमें किसी अन्य मूर्ति को स्थापित कर दिया गया है।

(2) पेंट रूफ शैली (पहाड़ी शैली)

पेंट रूफ शैली को ढलवां छत या पहाड़ी शैली के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदिर एक मंजिल से लेकर तीन मंजिल वाले भी होते हैं। अधिकतर एक मंजिलें मंदिर वर्गाकार पत्थर के निर्मित थड़े (Base) पर बने होते हैं। इनकी चारों दीवारों में लकड़ी के शहतीरों के बीच पत्थर की काठकुणी चिनाई से इस तरह के मंदिरों का निर्माण किया जाता है। मंदिर के बड़े कमरे के मध्य में गर्भगृह बना होता है। गर्भगृह में मुख्य प्रतिमा स्थापित की जाती है गर्भगृह में पूजा के समय केवल पुजारी ही जा सकता है इसके चारों ओर प्रदक्षिणा पथ होता है। श्रद्धालु लोग मुख्य प्रतिमा के दर्शन करने के पश्चात बाईं ओर से घूम कर प्रदक्षिणा पूरी करते हैं।

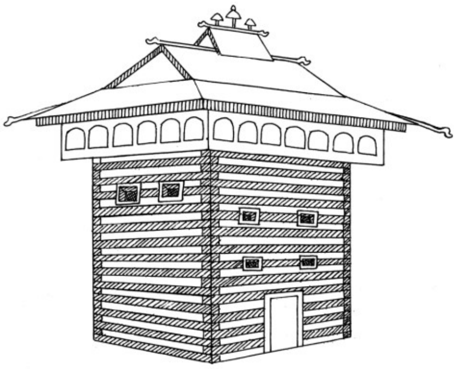

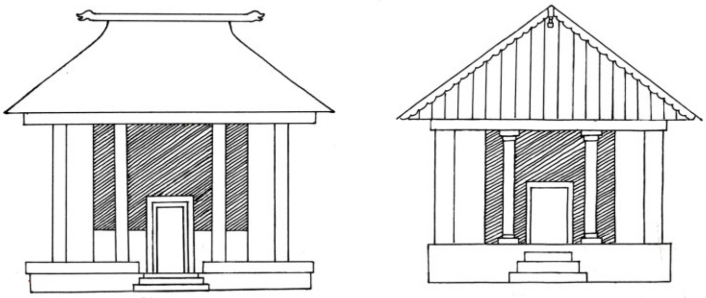

पैंट रूफ ;पहाड़ीद्ध मंदिर शैली

पहाड़ी शैली के इन मंदिरों की छतें दोनों ओर या चारों ओर ढलानदार झुकी होती हैं। छत के ऊपर एक लंबी शहतीर लगाई जाती है जिसके ऊपर तीन छत्र लगे होते हैं। इनमें बीच वाला छत्र बड़ा होता है जबकि अन्य दो छत्र जो दोनों किनारों पर लगे होते हैं छोटे होते हैं। शिव मंदिरों में छत्र की जगह त्रिशूल लगा होता है। छतें लकड़ी की बनाई जाती है जिसके ऊपर स्थानीय स्लेटें (पत्थर) लगाई जाती है जो प्रायः एक जैसे माप की बनी होती है। तीन मंजिले मंदिरों में बीच में एक बालकनी भी होती है। यह बालकनी 3-4 फुट चौड़ी होती है जो कि परिक्रमा करने के लिए बनाई गई होती है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

पहाड़ी शैली के मंदिरों के दरवाजों पर प्रयोग की गई लकड़ी पर बहुत महीन नक्काशी की गई होती है। दरवाजों पर गणेश, नाग, गंगा - यमुना तथा द्वारपालों की आकृतियां उकेरी गई है। यह शैली हिमाचल के देव मंदिरों की सबसे पुरानी शैली है।

(3) पैगोड़ा शैली

पैगोड़ा शैली के अधिकतर मंदिर मंडी, शिमला, किन्नौर जिलों में पाए गए हैं। इस शैली के मंदिरों की यह विशेषता है कि यह मंदिर बहुमंजिला होते हैं और लकड़ी के बने होते हैं। पहाड़ी शैली के मंदिरों की भांति इस शैली में भी काठकुणी चिनाई की जाती है। "मंदिर के चारों कोणों पर लकड़ी की इन शहतीरों को जोड़ने में जिस लकड़ी का प्रयोग किया जाता है उसे "मौकड़ी" कहा जाता है। कहीं-कहीं इन मंदिरों के आधार स्थल के मध्य से शीर्ष तक देवदार के एक पूरे पेड़ को खड़ा किया जाता है। इसके साथ लकड़ियों को चारों ओर से जोड़ा जाता है। प्रथम मंजिल में चारों ओर एक बरामदा होता है जिसमें परिक्रमा की जाती है।"

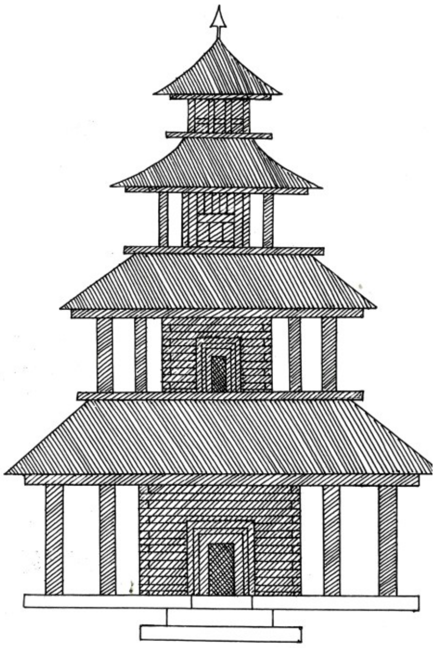

पैगोड़ा मंदिर शैली

पैगोडा शैली के इन मंदिरों में प्रथम मंजिल की छत चौड़ी होती है यह मंदिर पांच या सात मंजिल तक होते हैं। पहली मंजिल की छत चौड़ी तथा दूसरी, तीसरी, चौथी व पांचवीं छत क्रमशः आकार में छोटी होती जाती है।" ये छतें सामान्यतः छतरी के आकार की होती है। कई मंदिरों की छतें चौकोर भी होती है। सबसे ऊपर की छत सभी मंदिरों में प्रायः गोल होती है। प्रथम छत के आकार से शीर्ष की अंतिम छत का आकार एक तिहाई होता है।" सबसे ऊपर की छत पर तांबे, पीतल या चांदी का कलश लगा होता है। कहीं-कहीं कलश पर छत्र भी लगा होता है। पैगोड़ा शैली के मंदिरों में लकड़ी पर की गई सुंदर नक्काशी कारीगरों की कला निपुणता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करती है। पैगोड़ा शैली के अधिकतर मंदिर 14वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य बनाए गए हैं। कुछ विद्वान इस शैली को नेपाल से आयातित

मानते हैं। क्योंकि नेपाल में अधिकतर मंदिरों की पैगोड़ा शैली है। "सम्भवतः पैगोड़ा भवन निर्माण शैली उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में भोट वास्तुकला के प्रभावानुसार प्रचलन में आई थी। यही कारण है कि किन्नौर, लाहौल और स्पीति के उच्च भू- भागों में पैगोड़ा शैली निर्मित बौद्ध विहार आज भी लोगों को अचंभित करते हैं। ये भवन दूर से पिरामिड की तरह दिखाई देते हैं।

चंबा शहर के मंदिरों की स्थापत्य कला

हिमाचल प्रदेश के उत्तर पश्चिम में स्थित चंबा जिला विश्व के सुंदरतम भू-भागों में से एक है जो पर्यटकों के मन मस्तिष्क में स्वर्ग के अस्तित्व को साकार कर देता है। रावी नदी के किनारे 996 मीटर की ऊंचाई पर स्थित चंबा पहाड़ी राजाओं की प्राचीन राजधानी थी। चंबा को राजा साहिल वर्मन ने 920 ई. में स्थापित किया था। इस नगर का नाम उन्होंने अपनी प्रिय पुत्री चंपावती के नाम पर रखा। चारों ओर से ऊंची पहाड़ियों से घिरे चंबा ने प्राचीन संस्कृति और विरासत को संजो कर रखा है। यह जिला अपने रमणीय मंदिरों और हस्तशिल्प के लिए विश्वविख्यात है।

चंबा के प्राचीन मंदिर जो 10वीं से 18वीं शताब्दी के मध्य में बने हैं भारतीय विरासतों में से एक हैं। मेरु वर्मन के वंशजों में साहिल वर्मन (920 ई० से 940 ई०) एक ऐसा राजा हुआ है, जिसने अपने राज्य की राजधानी भरमौर से चंबा स्थानांतरित कर चंबा को मंदिरों की नगरी बनाया। इस शहर के कोने-कोने में अनेक छोटे-बड़े शिखर शैली के मंदिर बने हैं। इरावती (रावी) नदी के किनारे बसे हजार साल पुराने चंबा शहर के असंख्य मंदिर यहां के अतीत की स्मृतियों को संजोए हुए जीवित हैं।

चम्बा शहर का लक्ष्मी नारायण मंदिर समूह वास्तव में छः मंदिरों का एक समूह है वास्तुशिल्प की झलक पेश करने वाले इन मंदिरों में तीन मंदिर भगवान विष्णु तथा तीन भगवान शिव को समर्पित है। जगत के पालनहार भगवान विष्णु तथा संहारक भगवान शिव की बहुत सी पाषाण प्रतिमाएं इस शहर के कोने कोने में देखी जा सकती है। यहां के सभी मंदिर शिखर शैली में निर्मित कला के विशेष नमूने हैं।

चंबा शहर में निर्मित संस्कृति के बेजोड़ नमूने इन मंदिरों की स्थापत्य कला शैली उत्तर भारतीय अर्थात नागर/शिखर है नागर/शिखर शैली में निर्मित इन मंदिरों के निर्माण में निम्न अंग प्रमुखता से प्रदर्शित होते हैं :

(1) पीठ - आधार (Base)

(2) जंघा - कटि, कमर या मध्य भाग (Jangha)

(3) मंडोवर- वक्षस्थल (Breast Part)

(4) शिखर - शिर - मस्तक (Spire)

(5) अर्धमण्डप तथा महामण्डप

(6) गर्भगृह (Sanctum)

मंदिरों के अंगों को पुरुषांग के समान विभक्त किया गया है जो कि निम्न तालिका के आधार पर बताए गए हैं :

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

(1) पादुका (2) पद (3) चरण (4) आंध्रि (5) जंघा (6) ऊरू

(7) कटि (8) कुक्षी (9) पर्व (10) गल (11) ग्रीवा (12) कंधर

(13) कंठ (14) शिखर (15) शीर्ष (16) शिरष (17) मुर्धा (18) मस्तक

(19) मुख्य (20) वक्त्र (21) कुढ (22) कर्ण (23) नासिक (24) शिखा[6]

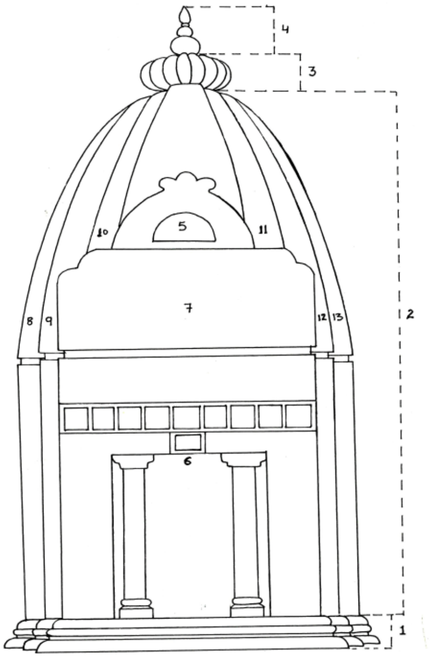

नागर शैली के मंदिरों के प्रमुख अंग :

(1) छाध्य (बेदीबंध, पीठ) (2) शिखर (3) आमलक (4) कलश (5) भद्रमुख (6) ललाटबिम्ब

(7) शुकनासा (8,10,11,13) कर्ण रेखा (9,12) प्रतिकर्ण

यहां यह बात भी स्पष्ट है कि मंदिर स्थापत्य का मौलिक आधार क्या है? जिस प्रकार आत्मा और परमात्मा, ईश्वर और जीव, निराकार और साकार का आपस में संबंध है उसी प्रकार मंदिर भी पुरुष से संबंधित है। नागर मंदिरों के शिखर पर जो कलश तथा अमलक स्थापित होता है वह निराकार ब्रह्म के प्रतीक हैं। महाविशाल पीठ से यह मंदिर अमलक तक एक बिंदु के रूप में प्रदर्शित होता है यही सर्वमयी रहस्य है।

नागर मंदिरों की बाहरी दीवारें भी अलंकृत होती है। पुरुष के शरीर को जिस प्रकार सुंदर कपड़े से ढांपा जाता है ठीक उसी प्रकार मंदिर की बाहरी दीवारों पर भी अलंकरण कर उसे सजाया जाता है। बाह्य दीवारों के स्थापत्य को दो भागों में बांटा जा सकता है :

(I) रचनात्मक

(II) मानात्मक

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

(I) रचनात्मक भाग के अंतर्गत निम्न अंग आते हैं :

(1) भद्र (2) मुखभद्र (भद्रमुख) (3) प्रतिभद्र (4) उपभद (5) कर्ण

(6) प्रतिकर्ण (7) रथ (8) प्रतिरथ (9) उपरथ

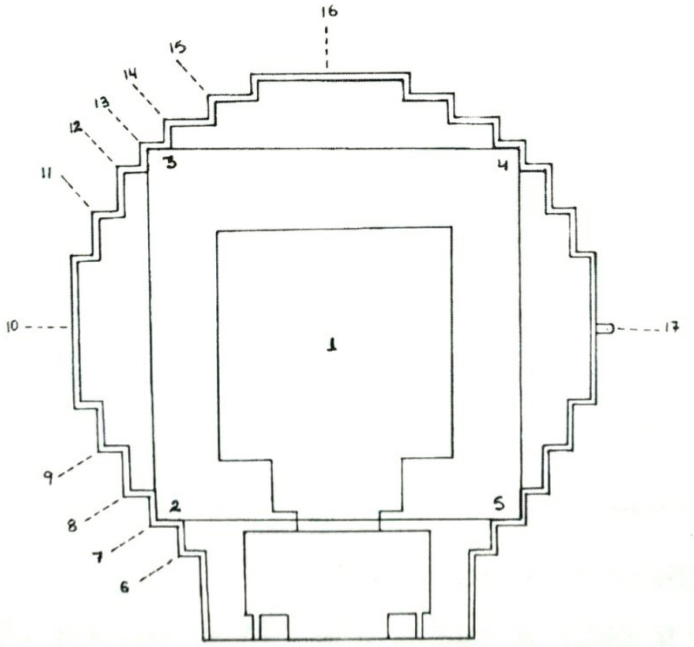

नागर शैली के मंदिरों का आधार (plan of Nagara temples)

(1)गर्भगृह (sanctum) (2 से 5) कर्ण रेखा (perpendicular line)

(6,8,11,13,15) नंदी (7,14) प्रति कर्ण (9,12) उप रथ (10) भद्र रथ (16) भद्ररथिका (17) परनाला

(II) मानात्मक भाग के अंतर्गत निम्न अंग आते हैं :

(1) नन्दी (2) वारिमार्ग (3) कोणिका (4) नन्दिका (5) तिलक

(6) स्कन्ध (7) ग्रीवा (8) गल[7]

इन भागों का नागर मंदिर स्थापत्य शैली में विशेष ध्यान रखा जाता है। चंबा के नागर मंदिरों का निर्माण भी इन्हीं अंगों के आधार पर किया गया है। मंदिर की जगती का अर्थ उसके पीठ (Base) से है। बिना पीठ अर्थात आधार के भवन की स्थापना नहीं हो सकती जिस प्रकार पुरुषों में पहला चरण अथवा पाद है, उसी प्रकार इस प्रासाद - पुरुष का अंग भी इसकी पीठ होती है। पीठ के ऊपर का न्यास विभक्त पदोयुक्त बनाया जाता है। न्यास को आसन, खुर तथा वेदीबंध भी कहा जाता है। वेदीबंध में कुंभक, कलश तथा अन्तरपत्र के आधार पर पत्थरों को एक निश्चित आकार में काटकर तैयार किया जाता है। कहीं-कहीं मेखला के साथ अन्तरपत्र भी दृष्टिगोचर होता है। मेखला तथा खुरक के बीच के एक निश्चित माप का अंतर भी उचित होता है। राजासन अर्थात मंदिर की जंघा का पाद द्विपद तथा चतुष्पाद अंकित किया जाता है।

मंदिरों की दीवारों में कर्णों के जंघा वाले भाग में स्थापित रथिकांओ में ग्रीवा, अण्डक, चंद्रिका तथा कलश को समान रूप से अपने-अपने माप पर आधारित स्थापित किया जाता है। ललाटबिम्ब पर या तो गणेश की आकृति या देवी की आकृति उकेरी जाती है तथा उसके ऊपर वाले भाग में या तो नवग्रहों या देवी के नौ रूपों का अंकन किया जाता है। शुकनासा पर सुंदर मूलमंजरी तथा भद्रमुख की स्थापना होती है। मंदिर के शिखर पर जो एक बिंदु बनता है उस पर अमलक तथा अमलक पर कलश की स्थापना की जाती है। भद्र रथों, भद्र रथिकांओ तथा उपरथिकांओ में मंदिर में स्थापित मुख्य मूर्ति से संबंधित मूर्तियां स्थापित की जाती हैं। नागर मंदिरों की यह सभी विशेषताएं चंबा शहर में स्थापित सभी मंदिरों में दृष्टिगोचर होती है।

शहर महज नाम का शहर या फैशन वाला बहुमंजिला इमारत वाला शहर नहीं होता बल्कि उसमें विरासतें और संस्कृतियां संजोई जाती हैं जिससे आने वाली पीढ़ियां रूबरू होती हैं। हिमाचल का चंबा शहर आधुनिक तथा प्राचीन परंपराओं के साथ अनूठा सामंजस्य बनाए हुए है। यहां के सभी मंदिरों में कला संस्कृति की अद्भुत झलक देखने को मिलती है। स्थापत्य शैली की दृष्टि से चंबा शहर के अधिकांश मंदिर नागर शैली में बनाए गए हैं। यहां के मंदिर ही इस धरती को पावन तथा पवित्र पहाड़ी राज्य का दर्जा प्रदान करते हैं।

संदर्भ

1. शर्मा, रूप : हिमाचल प्रदेश अंधकार से प्रकाश की ओर, पृष्ठ 74
2. शुक्ला, डी. एन.: टेंपल आर्ट एंड आर्किटेक्चर, पृष्ठ - 143
3. ठाकुर, लक्ष्मण सिंह : आर्किटेक्चरल हेरिटेज ऑफ हिमाचल प्रदेश (ओरिजन एंड डेवेलपमेंट ऑफ़ टेंपल स्टाइल) पृष्ठ - 26
4. वही : पृष्ठ - 27
5. लाल, नंद : चंबा शहर के मंदिर शिल्प का कलात्मक अध्ययन, विद्यावाचस्पति शोध प्रबंध, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, सन 2010, पृष्ठ – 117
6. शुक्ला, डी. एन.: टेंपल आर्ट एंड आर्किटेक्चर, पृष्ठ - 195
7. वही : पृष्ठ - 208